HINDI (MIL)
SUJECT CODE - 05
Classes : IX

प्रथम भाषा के जरिए भाषा–शिक्षण के कौशल–श्रवण, कथन, पठन और लेखन के अभ्यास और विकास को ध्यान में रखकर इस पाठ्यक्रम का निर्धारण किया गया है। प्रथम भाषा सभी भावों और विचारों के आदान–प्रदान का माध्यम होने के अलावा सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यबोध, साहित्य के रसास्वादन आदि ग्रहण करते विद्यार्थी आगे बढ़े, इस पर विशेष ध्यान दिया गया है। वर्तमान सभ्यता के आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण में जीविकोपार्जन के अनेक नए मार्ग खुल गए है। ऐसी स्थिति में भाषा की नयी प्रयोग नीति मे भाषा–शिक्षण से विद्यार्थी लाभन्वित हो, इस पर यथोचित ध्यान दिया गया है। जीवन, भाषा, और साहित्य से संबंधित विषयवस्तुओं को समानुक्रमिक विभिन्न कक्षाओं में समाहित करने की व्यवस्था की गयी है।

भाषा–शिक्षार्थी का उद्देश्य है – भाषा के व्याकरण, वर्तनी आदि विधिपूर्वक शुद्ध रूप से सीखना। साथ ही विद्यार्थी को साहित्य के रसास्वादन करना, राष्ट्रीयताबोध, देश तथा समाज के प्रति प्रेम, राष्ट्रीय–संस्कृति, दया आदि जैसे मानवीय गुणों को विकसित करना भी महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है। सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यबोध से प्रेरित होकर स्व–विकसित होना भी भाषा–शिक्षार्थी का परम दायित्व होता है। दरअसल प्रथम भाषा–शिक्षण के जरिए शिक्षार्थी को मानवोचित चरित्र सम्पन्न एक अच्छा नागरिक

बनाना ही इसका उद्देश्य है।

सामान्य उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर सिखायी गयी भाषा के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त करना, उन्हें गहनता से समझना तथा व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करने में सक्षम होना।
2. भाषा की नयी-नयी दिशाओं का ज्ञान अर्जित कर उसके विश्लेषण करने की योग्यता प्राप्त करना।
3. भाषातत्व का ज्ञान भाषाई कौशल की क्षमता में सुदृढ़ीकरण और वृद्धिकरण।
4. मौखिक अभिव्यक्ति का विकास कर सामाजिक मूल्यबोध में वृद्धिकरण।
5. श्रवण, कथन, पठन तथा लेखन की गति में तीव्रता लाना।
6. चर्चा, वाद-विवाद प्रतियोगिता, सभा-समिति आदि में हिस्सा लेना और उसका संचालन करना।
7. किसी घटना या समस्या, विषय आदि पर अपना विचार व्यक्त कर पाना तथा उसका हल कर पाना।
8. नयी दिशा / विचारधारा, विद्यार्थी-केन्द्रित दर्शन, मनोरंजन, कार्यक्षमता सम्पन्न, योग्यता सम्पन्न, ज्ञान ग्रहण कर व्यवहारिक जीवन में प्रयोग करना तथा नेतृत्व प्रदान करना।
9. किसी भी बात या कार्य को निरीक्षण कर उसके संबंध में अपना विचार अभिव्यक्त कर पाना।
10. भाषा और साहित्य के अध्ययन के जरिए विभिन्न

जनसमुदायों की साहित्य-संस्कृति के प्रति सहानुभूति का भाव उत्पन्न करना।

11. सृजनात्मक प्रतिभा को विकसित कर पाना।

विशेष उद्देश्य

2.00 श्रवण और कथन :

2.01 किसी घटना, भाषण, चर्चा, कथा-कहानी आदि सुनकर तथा समझकर स्पष्ट रूप से बोल पाना और व्यवहारिक जीवन में प्रयोग के लिए सक्षम होना।

2.02 आनन्ददायक कार्यक्रम आदि देख सुनकर आनन्द प्राप्त करने के साथ स्वयं हिस्सा ले पाना।

2.03 भाषणकर्ता के भाषण, आचार-व्यवहार इत्यादि सोच-समझकर मूल्यांकन कर पाना।

2.04 किसी वृत्तिमूलक भाषण, चर्चा आदि सुनकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण ग्रहण कर जीवन के लिए प्रेरणा प्राप्त करना।

2.05 अंधविश्वास, कुरीति आदि खिलाफ विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के जरिए वैज्ञानिक विचार अपनाना।

2.06 किसी घटना, भाषण, चर्चा, कथा-कहानी आदि सुनकर तथा समझकर स्पष्ट रूप से बोल पाना और व्यवहारिक जीवन में प्रयोग करने के लिए सक्षम होना।

2.07 वाक्य के शब्द का उतार-चढ़ाव, ध्वनि का आरोह-अवरोह आदि सुरक्षित रखकर शुद्धता और स्पष्टता से उच्चारण कर पाना।

2.08 विभिन्न गीत-संगीत, कविता, संवाद, आशु, भाषण, वाद-

विवाद, क्वीज, आदि की प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेना।

2.09 औपचारिक और अनौपचारिक रूप से व्यक्ति और समाज को सम्मान प्रदर्शन करना और आज्ञा, अनुरोध जैसे संबोधन व्यक्त करना और ग्रहण करना।

2.10 आँखों देखी किसी घटनाओं तथा कार्यो का वर्णन कर पाना।

2.11 जेष्ठता, कनिष्ठता तथा सम्मान को ध्यान में रखकर परिवेश के अनुकूल भाषा का प्रयोग करना।

2.12 लैंगिक समानता और सम्मान को ध्यान में रखकर परिवेश के अनुकूल भाषा का प्रयोग करना।

2.13 दूसरों की बात और कथन-शैली के प्रति सम्मान प्रदर्शन करना।

3.00 पठन और लेखन :

3.01 शुद्ध-उच्चारण, ध्वनि के आरोह-अवरोह तथा पठन की गति के नियंत्रण पर महत्व देते हुए शब्द, वाक्य आदि पढ़-लिख सकना।

3.02 भावों के अनुकूल वाक्य के आरोह-अवरोह पर ध्यान देते हुए पढ़ पाना और तेजी से पढ़ सकना।

3.03 पढ़ाई और लिखाई के समय विराम चिह्न (पूर्ण-विराम, अर्द्ध-विराम, भावबोधक, प्रश्नबोधक आदि) पर बल देना।

3.04 कक्षा के अनुसार पढ़ाई और लिखाई की गति में वृद्धि (समय के अनुसार) करना।

3.05 मानचित्र, विभिन्न सूची, कहानी, विभिन्न, रूचिकर कविताएँ, निबंध, पत्र, डायरी आदि देख-सुनकर, पढ़कर समझ पाना और स्वयं लिखने में समर्थ होना।

3.06 देखी हुई या सुनी हुई स्थानीय घटनाओं तथा अपने अनुभवों को लिखकर अभिव्यक्त कर पाना।

3.07 राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, स्थानीय कला-संस्कृति के साथ लोक-संस्कृति के बारे में पढ़कर उसका महत्व समझते हुए राष्ट्रीय प्रेरणा प्राप्त करना।

3.08 व्यावहारिक जीवन में प्रयुक्त भाषा में व्याकरण का शुद्ध प्रयोग करने में सक्षम होना।

4.00 चिन्तन और अभिव्यक्ति :

4.01 सुने हुए तथा पढ़े हुए तथ्यों, घटनाओं आदि पर क्रमानुसार विचार-विमर्श करने की क्षमता अर्जित करना और उनके कार्य, कारण तथा फल निर्णय कर एक को दुसरे के साथ तुलना कर पाना।

4.02 किसी एक विषयवस्तु के पक्ष-विपक्ष पर अपना तर्क प्रस्तुत करने के साथ-साथ सैद्धान्तिक मन्तव्य देना।

4.03 सही-गलत का निर्णय कर पाना।

4.04 राष्ट्रीय कला-संस्कृति के प्रति सम्मान प्रदर्शन और गौरवपूर्ण परम्परा के बारे में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने में सक्षम होना।

5.00 पाठ में प्रतिफलित होने वाली दिशाएँ :

5.01 राष्ट्रीय शिक्षा - नीति में सन्निविष्ट निम्नलिखित दस उपादान प्रतिफलित होंगे -

i) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास।

ii) संवैधानिक दायबद्धता।

iii) राष्ट्रीय पहचान के परिपूरक आवश्यक संसाधन।

iv) भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक गौरव।

v) साम्यवाद, जनतंत्र तथा पंथनिरपेक्षता।

vi) लैंगिक समता (पुरूष और महिला की समानता)।

vii) पर्यावरण संरक्षण।

viii) सामाजिक भेदभाव का दूरीकरण।

ix) परिवार नियोजन।

x) वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना।

साथ ही भारतीय और राष्ट्रीयता स्वरूपों के बारे में जानकारी, सामाजिक दायबद्धता (सार्वजनिक संपत्ति का संरक्षण, हिंसा-आतंक आदि से दूर रहकर स्पष्टवादी, जागरूक, शिष्टाचारी, सेवा-भावना संपन्न, सहयोगी, हमदर्द, समय का सदुपयोग, अहिंसा, दायित्वबोध, निष्ठा, प्रेम, करूणा, सहनशीलता, देश-प्रेम, श्रम की मर्यादा, परिवेश के प्रति जागरूक, विश्व-भ्रातृत्व, अनुकंपा, समाज-संस्कृति के प्रति श्रद्धा, आत्म-विश्वास, द्रुत तथा स्पष्ट सिद्धान्त, साहसी और मूल्यबोध आदि।

इसके अलावा पिछड़े हुए विद्यार्थियों के विकास, अहिंसा की उपलब्धि, जीवन-यापन का कौशल और कर्म-संस्कृति का निर्माण, सुखद अनुभूति का विकास आदि दिशाओं पर बल दिया गया है।

5.02 पाठ के प्रकार: पाठ्यपुस्तक में निबंध, जीवनी, आत्मकथा, कहानी, पत्रकारिता, भ्रमण, नाट्यांश आदि साहित्यिक रूप-रस (वर्णनात्मक, कथोपकथन, नाट्यरूप,

आलोचनात्मक) से प्रतिफलित पाठ सन्निविष्ट होगा।

5.03 **शैली :** पाठ्यपुस्क में प्राचीन, रोमांटिक तथा समसामयिक युग के लेख सन्निविष्ट होंगे।

5.04 व्यावहारिक क्षेत्र : यातायात (रेल, बस आदि), जनसंपर्क (दूरभाष, आकाशवाणी, समाचार-पत्र, दूरदर्शन, कम्पूटर आदि), स्थानीय निकाय (पंचायत, सुरक्षा, अदालत-कचहरी आदि), राज्यिक और संपर्क भाषा की भूमिका के बारे में आवश्यक जानकारी होना।

5.05 पाठों का चयन : उपर्युक्त दिशाओं में प्रतिफलित नीचे की विषयवस्तुओं के आधार पर पाठों का चयन किया गया है।

i) **नौवीं कक्षा का पाठ्यक्रम :**

(क) गद्य खंड: ऐतिहासिक घटना, खेलकूद, जीवनी (राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय), संवाद लेखन, कला, संगीत, राष्ट्रीय पहचान, स्वतंत्रता संग्राम, राष्ट्रीय एकता, वृत्तिगत विषय, श्रम की मर्यादा, देश-प्रेम, असम की भाषाई पहचान, जनजातीय कथा-कहानी, भ्रमण, संस्मरण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण संबंधी लेख, प्रकृति विषयक लेख, एकता और समता से संबंधित विषय, साहित्य का विश्वजनीन प्रेरणादायक लेख आदि।

(ख) काव्य खंड : आध्यात्मिक, दार्शनिक, नैतिक, देशप्रेममूलक, प्रकृति विषयक, मानवतावाद से संबधित, व्यंगात्मक कविता आदि।

(ग) व्याकरण : (1) लिंग (2) वचन (3) कारक (4) उपसर्ग य प्रत्यय (5) संधि (6) समास (7) वाच्य परिवर्तन

(8) पर्यायवाची शब्द (9) विलोम शब्द (10) मूहावरे और लोकोक्तियाँ

(घ) निबंध : विचारात्मक वैज्ञानिक पर्व विषयक समस्या संबंधी निबंध।

5.06 कार्यकलाप : प्रत्येक पाठ के अंत में भाषाई योग्यता के विकास हेतु कार्यकलाप सन्निविष्ट होंगे। इससे व्यावहारिक व्याकरण की अवधारणा, अभ्यास-कार्य,

टिप्पणी आदि सन्निविष्ट किए जाएंगे।

5.07 पाठ्यक्रम का विभाजन : नौवीं तथा दसवीं दोनों कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में सन्निविष्ट पाठों को क और ख दो खंडों में विभाजित किए जाएँगे। प्रश्नपत्र में क खंड में 75 अंक और ख में 25 अंक के प्रश्न होंगे।

6.00 शिक्षण-अधिगम के अधिभार:

6.01 शैक्षणिक अधिभार -

पाठों का आदान प्रदान-	40 प्रतिशत
कार्यकलाप -	30 प्रतिशत
व्याकरण और रचना -	15 प्रतिशत
व्यावहारिक क्षेत्र -	08 प्रतिशत
परियोजना, सर्जनात्मक कार्य -	05 प्रतिशत
निदानात्मक व्यवस्था -	02 प्रतिशत
कुल -	**100 प्रतिशत**

6.02 समय का उपयोग : वर्ष के कार्यदिवस २६२ के अन्दर विद्यालय के अन्य कार्यों के लिए १६ दिन और भाषा के लिए २५९ पीरियड मिलेंगे। पाठों के आदान-प्रदान हेतु निम्नप्रकार पीरियडों का निर्धारण किया गया है -

गद्य -	90 पीरियड
पद्य खंड -	90 पीरियड
व्याकरण -	30 पीरियड
निबंध-रचना -	25 पीरियड
द्रुतवाचन -	24 पीरियड
कुल	**259 पीरियड**

6.03 मूल्यांकन की अवधारणाएँ प्रतिदर्श (नमूना) भाषण, वाद-विवाद प्रतियोगिता, पुस्तकालय, अध्ययन, कविता लेखन, प्राचीर पत्रिका, पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ना, साक्षात्कार, सांस्कृतिक कार्यों में हिस्सा लेना, योग-व्यायाम, आदि मूल्यांकन पुस्तक तथा शैक्षणिक डायरी में सन्निविष्ट किए गए है।

7.00 **पाठ्यपुस्तकों की योजनाएँ, आकार-प्रकार आदि का निर्धारण :**

नौवीं और दसवीं कक्षा के लिए अलग-अलग पाठ्यपुस्तक (साहित्य) तथा पूरक पुस्तक होंगी। दोनों कक्षाओं के लिए व्याकरण की एक ही पुस्तक रहेगी। पाठ्यपुस्तक में 50 प्रतिशत का गद्य और 50 प्रतिशत का पद्य खंड रहेंगे। इन दोनों में 40 प्रतिशत पाठ साहित्यकेंद्रिक होंगे। पाठ्यपुस्तक की पृष्ठ संख्या लगभग 200 होंगी। आकार 18 डबल क्राउन, अक्षर 12 प्वाइंट और टिप्पणी, प्रश्न-अभ्यास, निर्देशन आदि 10 प्वाइंट के होंगे।

8.00 **मूल्यांकन :**

8.01 हर कक्षा में विद्यार्थी कितनी भाषाई योग्यताएँ अर्जित करेंगे, यह मूल्यांकन के जरिए ही जाना जा सकता है। पाठ्यपुस्तक तथा इसके अतिरिक्त दोनो क्षेत्रों में सामूहिक मूल्यांकन की व्यवस्था रहेंगी। युनिट टेस्ट के जरिए पिछड़े विद्यार्थियों की जानकारी प्राप्त होगी तथा इसके लिए निदानात्मक व्यवस्था के जरिए उन्हें आगे बढ़ाए

जाएँगे। दूसरी ओर शिक्षक-शिक्षिका भी अपनी शिक्षण प्रणाली तथा कौशल संबंधी त्रुटियों को समझकर अपनी शिक्षण प्रणाली में सुधार की व्यवस्था करेंगे। मूल्यांकन के जरिए विद्यार्थियों के पुस्तक केन्द्रित, पुस्तक बहिर्भूत दोनों क्षेत्रों में मूल्यांकन किए जाएँगे। इस प्रणाली के संबंध में सभी विवरण परिषद द्वारा प्रकाशित शैक्षणिक डायरी और Continuous and Comprehensive Evaluation नामक दो पुस्तकों में विस्तृत रूप से लिखा हुआ है। पुस्तक केंद्रित मूल्यांकन के लिए निम्नप्रकार अंकों के विभाजन किए जाएँगे-

पाठ्यपुस्तकों के पाठों का अंक विभाजन

(क) नौवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकों के पाठों का अंक विभाजन निम्नलिखित है -

खण्ड - क Group - A

गद्य भाग	25
पद्य भाग	20
पूरक पाठ्यपुस्तक	10
व्याकरण	10
पत्र-लेखन	04
निबंध लेखन	06
कुल	**75**

खण्ड - ख Group - B

गद्य भाग	09
पद्य भाग	07

व्याकरण	04
अनुच्छेद–लेखन	05
कुल	**25**

खण्ड – ग Group - C

गद्य भाग	10
पद्य भाग	08
व्याकरण	07
कुल	**25**
कुल अंक	**100**

(विद्यार्थी (क) खण्ड और (ख) खण्ड **अथवा** (क) खण्ड और (ग) खण्ड के पाठ्यक्रम प्रदेंगे।)

HINDI (MIL)
SUBJECT CODE - 05
Class - IX

Full Marks : 100 **Time : 3 hours**

Unit	SUB-UNIT/LESSON	Marks	
		Half Yearly	Final
	Textbook : Ambar, Part - 1 **Group – A (:75 Marks)** **Poetry : (20 Marks)**		
1.	पद, भजन	11	08
2.	ब्रज की संध्या, पथ की पहचान (बच्चन)	9	12
	शक्ति और क्षमा		
3.	**Prose : (25 Marks)** पंच परमेश्वर, खाने–खिलाने का राष्ट्रीय शौक,	15	12
	दु:ख		
4.	गिल्लू	10	13
	अंधविश्वास की छीटें, जीवन संग्राम पर्वो का देश भारत		
5.	**परिपूरक पाठ्यपुस्तक** – वैचित्र्यमय असम (आहोम, कार्बि, कछार की जनगोष्ठियाँ, कोंच राजबंशी,	10	10
	गरिया, मरिया और देशी, गारो, सौताल, चाय जनगोष्ठी, सुतीया, ठेंगाल कछारी, डिमासा, कलिता		

Unit	SUB-UNIT/LESSON	Marks	
		Half Yearly	Final
6.	**व्याकरण** – (लिंग, वचन, कारक, उपसर्ग, प्रत्यय, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, वाच्च परिवर्तन)	10	10
7.	**पत्र-लेखन**	04	04
8.	**निबंध-लेखन**	06	06
9.	**GROUP-B** अंक : 25 **Poetry : (07 Marks)** बरगीत	07	07
	मुक्ति की आकांक्षा		
10.	**Prose : (09 Marks)** वे भूले नहीं जा सकते	09	09
	पिपलांत्री : एक आदर्श गाँव		
11.	**व्याकरण**-(संधि, समास, मुहावरे, लोकोक्ति)	5	05
12.	**अपठित गद्यांश/अनुच्छेद-लेखन**	**4**	**04**
	Total =	**100**	**100**